MiG 21 Indian Air Force

MiG 21

The MiG-21 was the Soviet Union's first truly modern, second-generation jet fighter. Testing began in 1955, and the first version entered service in 1959 as the MiG-21 F. Soviet designers developed a unique "tailed delta" configuration with a very thin delta wing, which gave the aircraft manoeuvrability, high speed, good medium-altitude performance, and adequate take-off and landing characteristics.

The MiG-21 became the standard Soviet clear-air interceptor. With the addition of radar, more powerful engines, and other modifications, it became a multi-role fighter. Over 6,000 MiG-21s of more than 12 types were flown by over three dozen nations.

MiG 21 in IAF

The IAF's long tryst with the MiG-21 began when its first few MiG-21s were procured in 1963 from the Soviet Union. The 1962 war with China and growing hostility from Pakistan had lent urgency of efforts to rapidly scale up India's military capability despite its cash-strapped economy. The Soviet Union was willing to sell this fighter aircraft on extremely favourable terms and even agreed for licensed production by Hindustan Aeronautics Limited (HAL). Few could then have foreseen that over the next 25 years, in excess of 800 MiG-21s would be inducted into the IAF. Of these, HAL built over 500 aircraft in three variants – MiG-21FL, MiG-21M and MiG-21 BIS. No other fighter in the IAF's inventory has ever come close to these figures. The MiG-21's sheer numbers made it the mainstay of the IAF's combat fleet for around three decades, despite the induction of more modern aircraft such as the Dassault Mirage 2000, the MiG-29 and the Su-30 MKI.

COMBAT DUTIES

In the 1965 Indo-Pak war, the IAF effectively employed MiG-21 aircraft in combat. In the 1971 war, the IAF deployed eight squadrons of MiG-21 and scored eight air-to-air kills against PAF aircraft. The strike mission on Governor's House at Dhaka by MiG-21s hastened the surrender by Pakistan forces. During the Kargil conflict, the MiG-21s undertook reconnaissance and ground attack missions. One month after conflict termination, an Indian MiG-21 shot down Pakistan Navy's Atlantique aircraft over the Rann of Kutch. In 2019, the aircraft was employed in AD role during punitive strikes over Balakot. In 2025, the aircraft was employed on ORP role during Op Sindoor.

The Department of Posts is pleased to issue a commemorative postage stamp on **MiG-21 Indian Air Force**. This commemorative stamp highlights the long and distinguished service of the MiG-21 aircraft in the Indian Air Force.

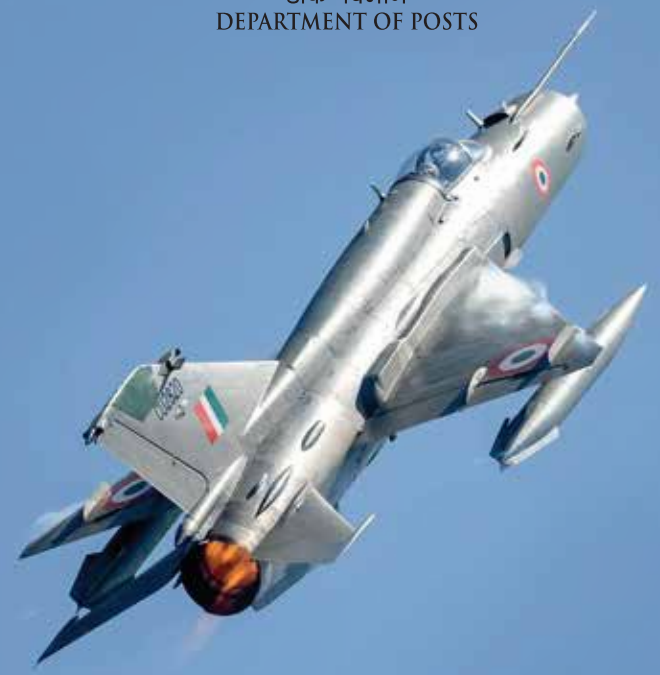
Credits:

Stamp/FDC/Brochure/
Cancellation Cachet : Shri. Shankha Samantha

Text : Based on the content provided by the Indian Air Force

भारतीय डाक
डाक सेवा-जन सेवा
India Post
Dak Sewa Jan Sewa

डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS



1963-2025
62
वर्ष YEARS

मिग-21 भारतीय वायु सेना

MiG-21 INDIAN AIR FORCE

विवरणिका BROCHURE

मिग–21 भारतीय वायु सेना

मिग–21 का इतिहास

मिग–21 सोवियत यूनियन का सही मायने में दूसरी पीढ़ी का सर्वप्रथम आधुनिक लड़ाकू विमान था। इस विमान का परीक्षण 1955 में आरंभ हुआ और पहला संस्करण 1959 में मिग–21 एफ के रूप में सेवा में आया। सोवियत डिजाइनरों ने एक अद्वितीय टेल्ड डेल्टा संरचना विकसित की, जिसमें एक बहुत पतलादृसा डेल्टा विंग था, जिसने विमान को गतिशीलता, उच्च गति, मध्यम ऊंचाई पर अच्छा प्रदर्शन और पर्याप्त टेकआफ और लैंडिंग विशेषताएं प्रदान की।

मिग–21 सोवियत संघ का एक अग्रणी क्लियर–एयर–इंटरसेप्टर(अवरोधक) विमान बन गया। रडार, अधिक शक्तिशाली इंजनों और अन्य संशोधनों के साथ यह विमान बहु–आयामी लड़ाकू विमान बन गया। 12 से अधिक तरह के, 6,000 से ज़्यादा मिग–21 विमानों का संचालन तीन दर्जन से अधिक देशों द्वारा किया गया।

भारतीय वायु सेना में मिग–21

भारतीय वायु सेना का मिग–21 के साथ लंबा संबंध 1963 में सोवियत संघ से पहले कुछ मिग–21 खरीदने के साथ शुरू हुआ। चीन के साथ 1962 के युद्ध और पाकिस्तान से बढ़ती शत्रुता ने भारत की आर्थिक तंगी से जूझ रही अर्थव्यवस्था के बावजूद भारत को अपनी सैन्य क्षमता को तेजी से बढ़ाने के प्रयासों को और भी अधिक आवश्यक बना दिया था। सोवियत संघ इस लड़ाकू विमान को बेहद अनुकूल शर्तों पर बेचने को तैयार था और उसने हिन्दुस्तान एरोनॉटिक्स लिमिटेड (हिएलि) के लाइसेन्स के अंतर्गत उत्पादन के लिए भी सहमति दे दी थी। तब शायद ही किसी ने सोचा होगा कि अगले 25 सालों में भारतीय वायु सेना में 800 से ज़्यादा मिग–21 शामिल किए जाएँगे। इनमें से हिएलि ने तीन वेरिएयंट्स मिग–21 एफएल, मिग–21 एम और मिग–21 बिस के 500 से अधिक विमानों का निर्माण किया। भारतीय वायु सेना के बेड़े में कोई भी अन्य लड़ाकू विमान इन आंकड़ों के करीब नहीं पहुँच पाए हैं। मिग–21 की भारी संख्या में उपलब्धता ने इसे लगभग तीन दशकों तक भारतीय वायु सेना के लड़ाकू बेड़े का मुख्य आधार बनाए रखा, भले ही मिराज–2000, मिग–29 और SU–30 MKI जैसे अधिक आधुनिक विमानों को शामिल किया गया।

लड़ाकू कर्तव्य

1965 के भारत–पाक युद्ध में भारतीय वायु सेना ने युद्ध में मिग–21 विमानों का प्रभावी ढंग से इस्तेमाल किया था। 1971 के युद्ध में, भारतीय वायु सेना ने मिग–21 के आठ स्क्वाड्रन तैनात किए और हवा–से–हवा आक्रमणों में पाकिस्तानी वायुसेना के आठ लड़ाकू विमानों को मार गिराया। ढाका में गवर्नर हाउस पर मिग–21 विमानों द्वारा किए गए हमलो ने पाकिस्तानी सेना के आत्मसमर्पण को तेज कर दिया। कारगिल संघर्ष के दौरान, मिग–21 का इस्तेमाल टोही और जमीनी लक्ष्यों पर आक्रमण अभियानों हेतु किया गया था। संघर्ष समाप्ति के एक महीने बाद, भारतीय मिग–21 ने कच्छ के रण के ऊपर पाकिस्तानी नौसेना के अटलांटिक विमान को मार गिराया। 2019 में बालाकोट पर दंडात्मक कार्रवाई के दौरान इस विमान को एयर डिफेंस भूमिका में तैनात किया गया था। इस विमान को 2025 में ऑपरेशन सिंदूर के दौरान ओआरपी भूमिका में तैनात किया गया था।

डाक विभाग, **मिग–21 भारतीय वायु सेना** पर स्मारक डाक टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है। यह स्मारक डाक टिकट भारतीय वायु सेना में मिग–21 विमान की दीर्घ एवं विशिष्ट सेवा को रेखांकित करता है ।

आभार:

डाक–टिकट/प्रथम दिवस आवरण/विवरणिका/विरूपण कैशे : श्री शंख सामंत

पाठ : भारतीय वायु सेना द्वारा प्रदत्त सामग्री पर आधारित।

तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

मूल्य	:	500 पैसे
Denomination	:	500 p
मुद्रित डाक टिकटें	:	302910
Stamps Printed	:	302910
मुद्रण प्रक्रिया	:	वेट ऑफसेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक	:	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	:	Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the Stamps, Miniature Sheets, First Day Cover and Information Brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 15.00